BA-2, Paper - 2nd
Topic - Party System
Date - 07.07.2020
Seema Kumari, Asst. Prof. (Pol. Sc.), RMC, VKSU
Book Reference - O.P. Gauba, Pukhraj Jain.

मौरिस डुवर्जर का दलीय प्रणाली सिद्धांत :- फ्रेंच राजनीति-वैज्ञानिक मौरिस डुवर्जर (1917-2014), ने अपनी चर्चित कृति Political Parties (1951) में लिखा कि राजनीतिक दलों की उत्पत्ति को समझना बहुत सरल है। लोकतंत्र में जैसे जैसे मताधिकार का विस्तार होता है, दल के नेताओं के मन में नए मतदाताओं को अपने दल की ओर आकर्षित करने की इच्छा बढ़ जाती है। इससे दलीय राजनीति का विस्तार होता है।

दलीय संरचना का विस्तार करते हुए डुवर्जर ने 4 प्रकार के राजनीतिक दलों की पहचान की है। 1. गुट बैठक 2. शाखा दल 3. कोशिका दल 4. नागरिक सेना

1. गुट बैठक - इसमें इने गिने सदस्य होते हैं। विशाल जनसमूह को इकट्ठा करने में रुचि नहीं रखता। सदस्यों की गुणवत्ता पर बल देता है। चुनाव गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करना। चुनाव न रहने पर सुप्त अवस्था में रहना।

2. शाखा दल - का उदय पश्चिमी यूरोप में मताधिकार के विस्तार का परिणाम है। यह जनपुंज पर आधारित दल होता है। ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनाना। इनकी राजनीतिक गतिविधियां निरंतर चलती रहती है। ऐसे दल में एक केंद्रीय ढांचा रहता है परंतु इसकी बुनियादी इकाइयां निर्वाचन क्षेत्रों की व्यवस्था के अनुरूप भौगोलिक आधार पर बंटी रहती है। जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी इस तरह के संगठनात्मक ढांचे का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

3. कोशिका दल - मुख्यतः क्रांतिकारी समाजवादी दलों की देन है। इसका संगठनात्मक ढांचा शाखा दल की तरह भौगोलिक क्षेत्रों पर आधारित नहीं होता, बल्कि कार्यस्थल के साथ जुड़ा रहता है। शाखा की तुलना में कोशिका

Scanned with CamScanner

छोटी होती है। मूलतः कोशिका दल का अविष्कार गुपचुप काम करने के लिए किया गया था। कोशिका दल की ज्यादा उपयोगिता गुप्त गतिविधियों में रही है चुनाव जीतने में नहीं।

4. नागरिक सेना – इसका ढांचा सेना के श्रेणीतंत्रीय संगठन से बहुत मिलता जुलता है। श्रेणीतंत्र ऐसी व्यवस्था है जिसमें सारी सत्ता ऊंचे और निचले स्तरों या श्रेणियों के रूप में क्रमबद्ध होती है। हिटलर के स्टार्म ट्रूपर्स और मुसोलिनी की फासिस्ट मिलिशिया इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

दुवर्जर ने आलोचनात्मक ढंग से लिखा है कि कोई भी राजनीतिक दल केवल नागरिक सेना के आधार पर खड़ा नहीं किया जा सकता। जीन ब्लांडेल का विचार है कि दुवर्जर ने अपने वर्गीकरण में जिन दलों को गुट बैठक और जनपुंज दल की संज्ञा दी है उन्हें क्रमशः अप्रत्यक्ष शासन और प्रत्यक्ष शासन में विश्वास रखने वाले दलों की श्रेणियों में रखना चाहिए।

(1924-2017)
जोवानी सारटोरी का सिद्धांत :– Book - Parties and Party System (A framework for analysis) 1976, के अंतर्गत बहुदलीय प्रणालियों ~~के अंतर~~ विश्लेषण का ढांचा प्रस्तुत किया है। सारटोरी ने दो तरह की बहुदलीय प्रणालियों में अंतर करने का सुझाव दिया है-

क) संयत बहुलवादी प्रणालियां

ख) ध्रुवीकृत बहुलवादी प्रणालियां – राजनीतिक गतिहीनता को जन्म देती है और कभी कभी लोकतंत्र को ही छिन्न भिन्न कर देती है।

सारटोरी ने ध्रुवीकृत बहुलवाद को 4 लक्षणों के आधार पर अन्य बहुदलीय प्रणालियों से अलग किया है -

1. इसमें आम तौर पर पांच से अधिक विचारणीय दल पाए जाते हैं।
2. ध्रुवीकृत बहुलवादी प्रणाली के अंतर्गत विचारणीय दलों के बीच बहुत ज्यादा विचारधारात्मक दूरी पाई जाती है। यहां राजनीतिक मतभेद इतने गहरे होते हैं कि नीति के मुद्दों पर न तो विशिष्ट वर्ग सहमत होते हैं न जनसाधारण ही परस्पर सहमत होते हैं।

3. यह प्रणाली बहुध्रुवीय होती है, इसमें ऐसे गुणों, विचारों, मान्यताओं, नीतियों और कार्यक्रमों का समुच्चय जो अपने जैसे अन्य समुच्चयों का विपरीत रूप प्रस्तुत करता है। एक केंद्रीय विचारधारा से परे अनेक परस्पर विरोधी विचारधाराएं पाई जाती है।

4. इसमें उग्र बहुलवाद के कारण अपकेंद्रीय प्रवृत्ति पाई जाती है। इस तरह ध्रुवीकृत बहुलवादी प्रणाली के अंतर्गत पांच से अधिक विचारणीय दलों की प्रतिस्पर्धा उन्हें विचारधारात्मक, संजातीय धार्मिक, भाषाई या अन्य किसी ऐसे स्तर पर पृथक पृथक शिविरों में बांट देती है।

संयत बहुलवादी प्रणाली के अंतर्गत प्राय: सारी राजनीति एक केंद्रीय दल के चारों ओर मंडराती रहती है, इसमें विपक्ष की रचनात्मक या उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका की विशेष गुंजाइश नहीं रहती है। वाइमर जर्मनी, फ्रांस के चतुर्थ गणराज्य और चिली की। अभी दलीय प्रणालियों के विश्लेषण में सारटोरी द्वारा किया गया बहुदलीय प्रणालियों का विश्लेषण महत्वपूर्ण है।